SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः

समग्र शिक्षा
सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

NIPUN BHARAT

खेल खेल में

आई.एस.बी.एन. : 978-93-93667-35-9

© राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली

जनवरी 2022

8200 (प्रतियाँ)

प्रकाशितः राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
मुद्रितः चंदू प्रेस, नई दिल्ली–110092

समग्र शिक्षा
सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

NIPUN BHARAT

खोला खोला में-2

मुख्य सलाहकार
श्री एच. राजेश प्रसाद, प्रधान सचिव शिक्षा
श्री हिमांशु गुप्ता, निदेशक शिक्षा, जी.एन.सी.टी दिल्ली
श्री रजनीश सिंह, निदेशक, एस.सी.ई.आ.रटी., दिल्ली

शैक्षिक सलाहकार
डॉ. नाहर सिंह, सह निदेशक, एस.सी.ई.आ.रटी., दिल्ली

समन्वयक और संपादन
डॉ. रितिका डबास, वरिष्ठ प्रवक्ता, एस.सी.ई.आ.रटी., दिल्ली
डॉ. मीना सहरावत, डाइट, घुम्मनहेड़ा, एस.सी.ई.आ.रटी., दिल्ली

चित्रांकन व लेआउट
अनिल कुमार परगनिहा

प्रकाशन विभाग
डॉ. मुकेश यादव, एस.सी.ई.आ.रटी., दिल्ली

प्रकाशन दल
नवीन कुमार, राधा, जय भगवान

SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
वरुण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, दिल्ली–110025

खेल खेल में—भाग 2

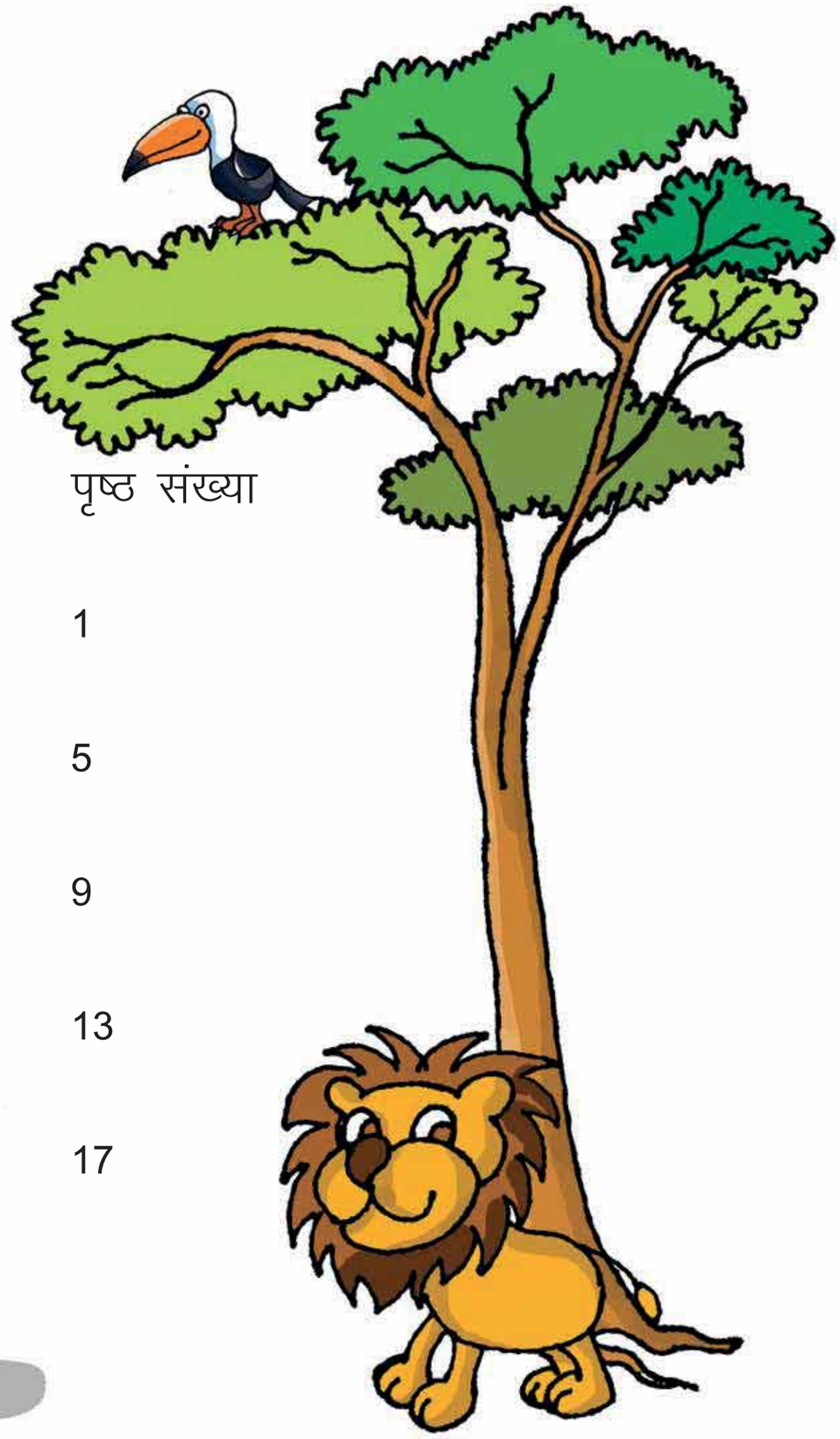

कहानी	पृष्ठ संख्या
1. सिम्मी का पड़ोस	1
2. दादाजी का डेंचर	5
3. अभि और अमू की सैर	9
4. तरीके कितने	13
5. राहुल बना परी	17

सिम्मी का पड़ोस

मेरे पड़ोस में कितने सारे लोग रहते हैं।

हमारे घर के सामने, रानी का घर है
और दांई तरफ बादल का।

रानी अपनी नानी के
साथ रहती है।

इस परिवार में
छः सदस्य हैं।

बादल अपने पापा
के साथ रहता है।

सिम्मी अपने घर भागी और
अपने परिवार का चित्र बनाया।

लेखक-शीतल पॉल
सलाहकार, ओचर ओथर

दादाजी का डेंचर

सब खाएं भुट्टा, मुझे भी खाना भुट्टा।
पर कैसे खाऊं भुट्टा ?

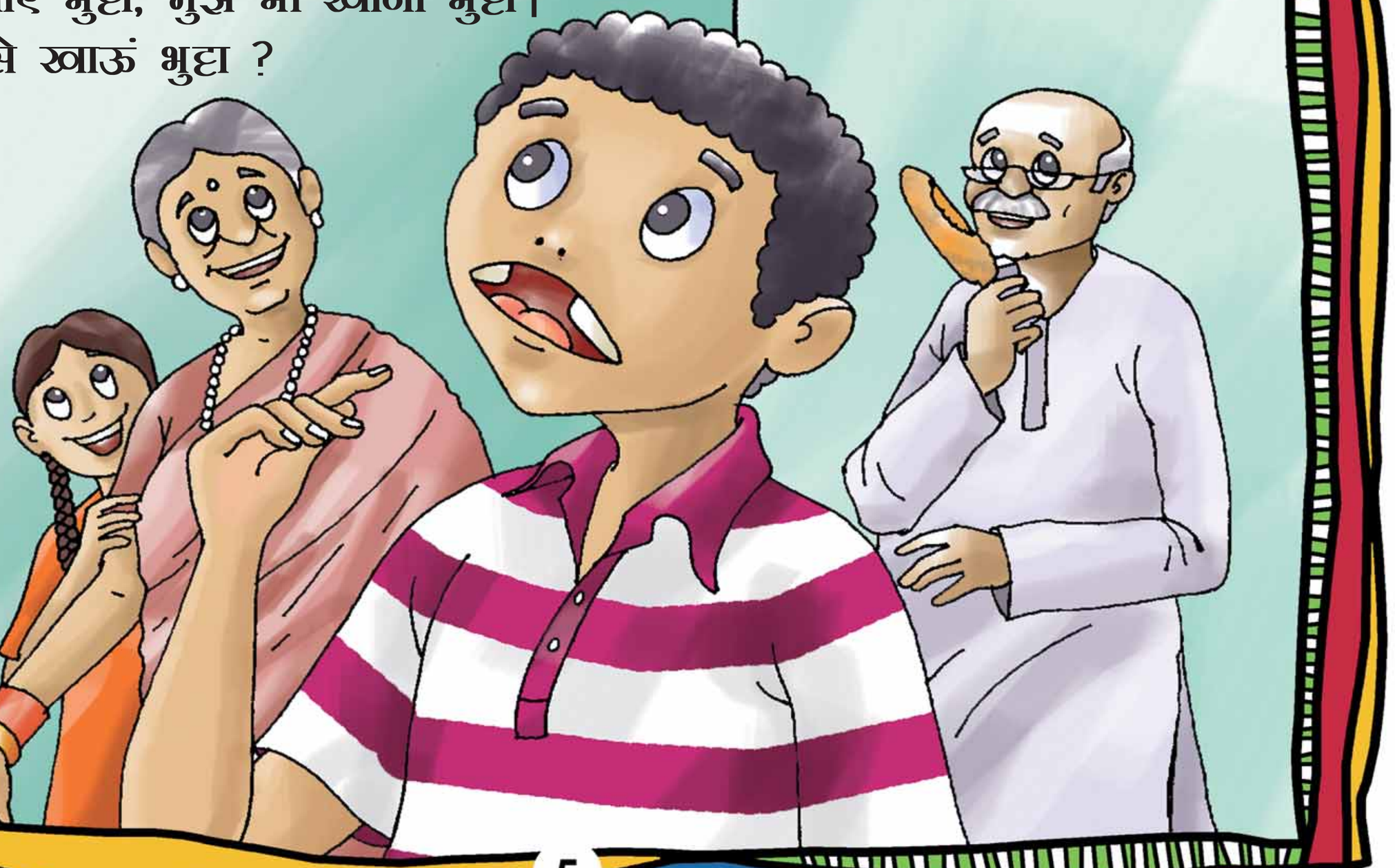

दादाजी खाएं डेंचर से,
मैने भी मांगे नकली दांत।

दादीजी हंस कर बोली, “दादाजी के तो
ना आएंगे अब कोई दांत”।

“मगर तुम्हारे तो थे कच्चे,
जल्द आएंगे पक्के दांत,
मानो मेरी बात।

लेखक-राजा, शिक्षक प्रशिक्षु, डाईट घुमनहेड़ा, दिल्ली

अभि और अमू की सैर

माँ, हम जा रहे हैं!

ज़्यादा दूर मत जाना और समय से लौट आना।

टी टो टी टो टी टो....
अरे! एम्बुलेंस।
अभि, चलो इसके रास्ते से
हट जाते हैं।
ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग....
अभि, आइसक्रीम वाले भैया!
एक–एक आइसक्रीम हो जाये?

छुक छुक छुक छुक....

पीपीप पीपीप
पीपीपी...

अरे, इतनी तेज़ हार्न?
भैया, आपकी साइकिल रास्ते
में खड़ी है क्या ?

भाऊ भाऊ!

ओहो! अभी तो यह
शाम वाली माल गाड़ी की
आवाज़ है। भागो आज फिर
हमें देर हो गयी!

लेखक–गरिमा
सलाहकार, एन.ए.टी.ई.

तरीके कितने

पता है हम कितने ही तरीके से
अपनी बात कह सकते हैं।
जैसे मुझे कहानियाँ बहुत पसंद हैं,
यह मैं बोलकर बता देता हूं।

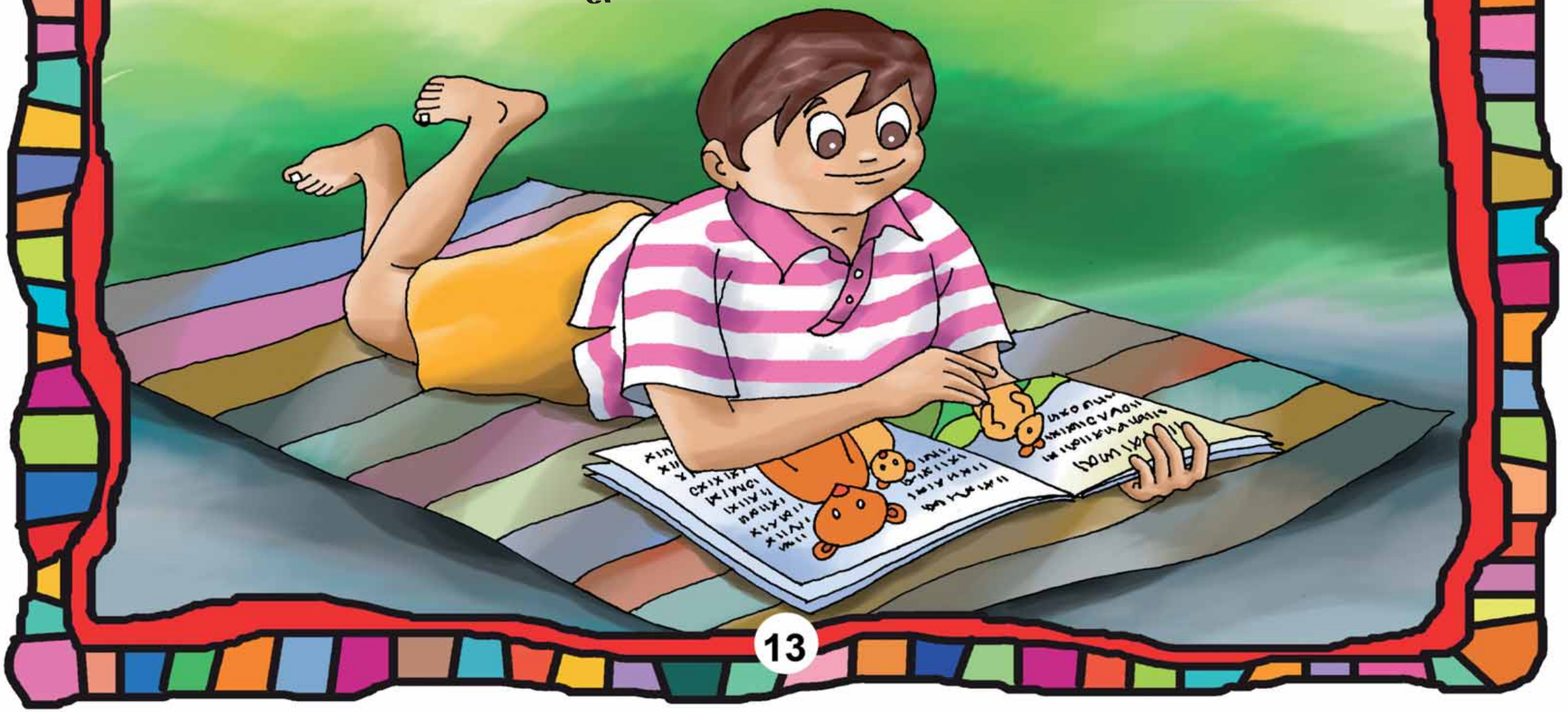

मिट्ठू मुस्कुराकर या नाक सिकोड़कर,
जवाब दे देता कि वह साथ खेलेगा या नहीं।

झुमकी को ब्रेड कैसा लगा,
वह पूंछ हिलाकर,
गोल घूमकर या सूंघकर
अपनी सहमति जताती है।

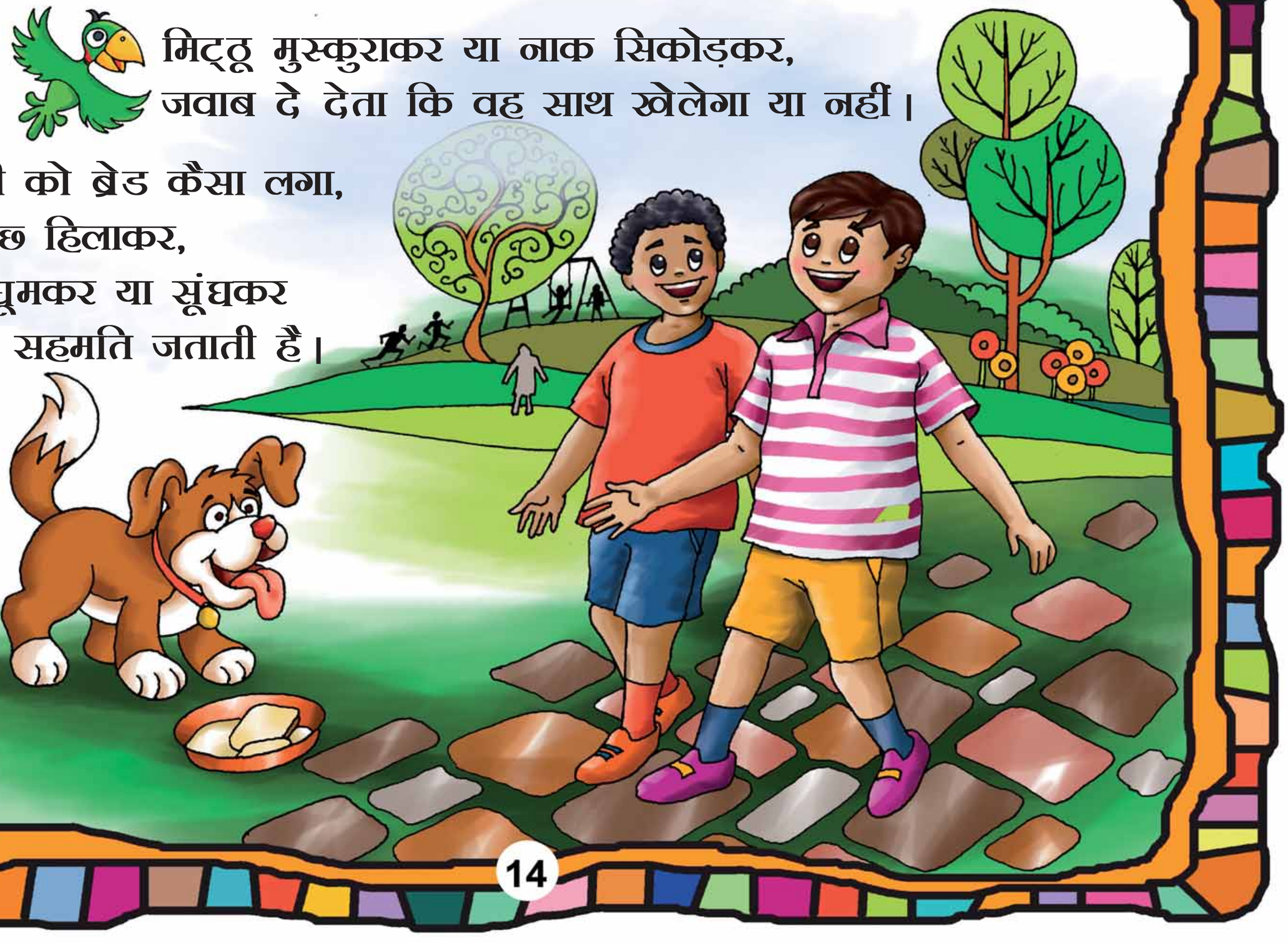

गेंदे के फूलों को भरपूर धूप और पानी मिला,
वह खिलकर जता पाते हैं।
सुरैया रेत या कागज़ पर चित्र उकेरकर,
अपनी पसंद ज़ाहिर करती है।

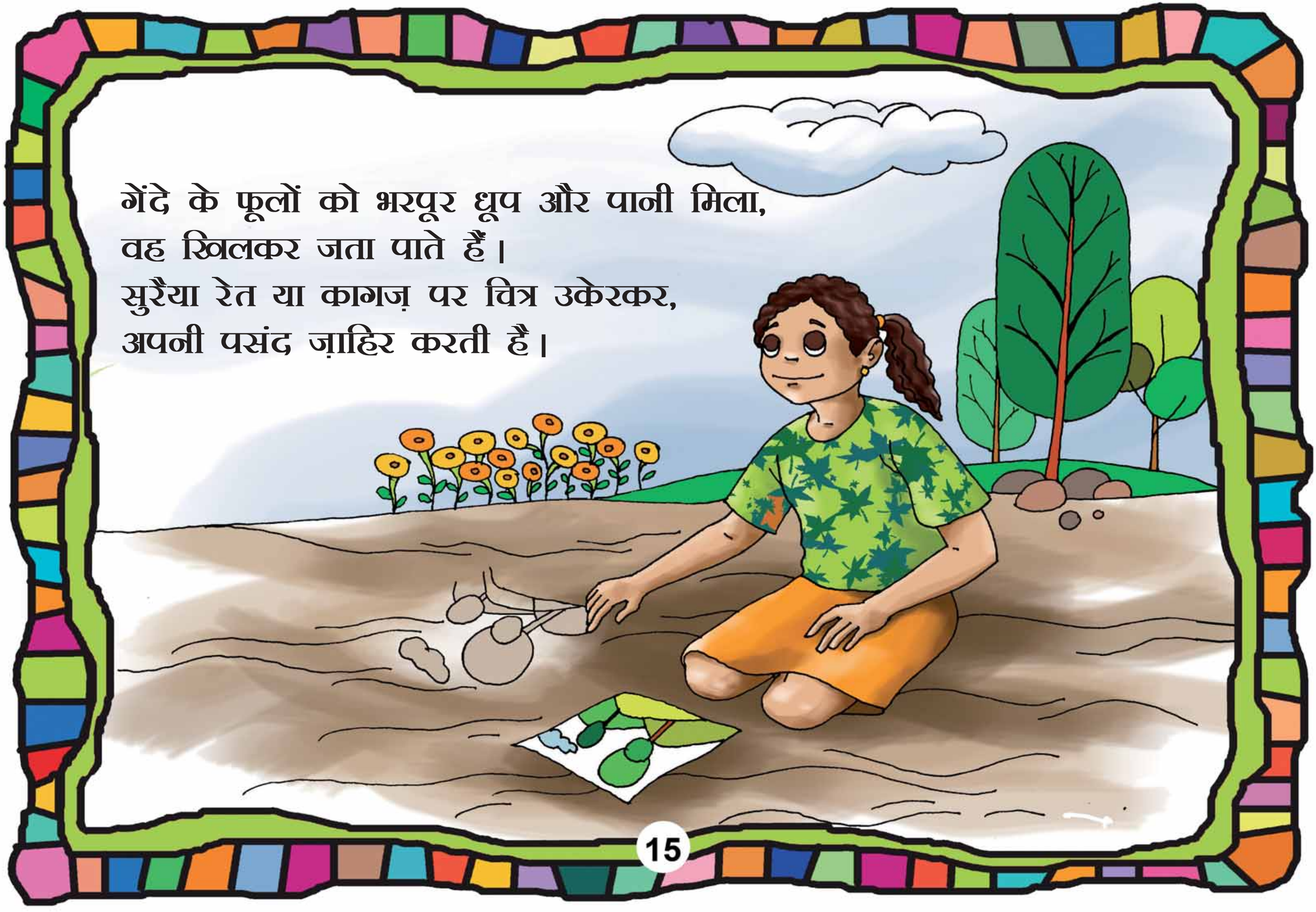

और कहो! हमारे तरीके कैसे लगे,
तुम यह कैसे जताना चाहोगे ?

लेखक–लतिका
आहवान ट्रस्ट

राहुल बना परी

राहुल की थी दो बहनें, तीनों साथ ही खेलते–खाते।

बहनें मांगें फ्रॉक,
वह भी मांगे फ्रॉक!

एक दिन बहनें बनीं परी,
वह भी बनना चाहे परी!

मम्मी–पापा जब ऑफिस से आये, बहनें राहुल की शिकायत लगायें।
पापा हंस कर बोले, चलो बनाएं तुम्हें भी परी, झट से लगा दी ताज और छड़ी!

लेखक–नितिन
शिक्षाक प्रशिक्षु, डाईट घुमनहेड़ा, दिल्ल

बच्चों तक कहानियाँ कैसे पहुँचाएं?

पढ़ने से पहले–

1. किताब का परिचय दें (शीर्षक को पढ़ें, लेखक का नाम बताएँ।)
2. अनुमान लगाने हेतु प्रश्न पूछें। जैसे–
   - आपके हिसाब से मुख्य पात्र कौन है?
   - आपको क्या लगता है कि मुख्य पात्रों के साथ क्या हुआ होगा?
   - क्या आपके घर पर भी फलां चीज है? (बच्चों की ज़िंदगी से जोड़ें)
   - क्या आपके साथ भी कभी ऐसा हुआ है? (बच्चों की ज़िंदगी से जोड़ें)

मौखिक रूप से कहानी सुनाना–

1. हाव–भाव और आवाज में उतार–चढ़ाव के साथ कहानी सुनाएँ।
2. कहानी में आए नए शब्दों पर बच्चों के साथ चर्चा करें।

पुस्तक पढ़ने के दौरान–

1. हाव–भाव के साथ धीरे–धीरे और स्पष्ट रूप से बोलकर पढ़ें।
2. अनुमान लगाने वाले प्रश्न पूछें। जैसे, बताइए आगे क्या होने वाला है?
3. यदि पढ़ते समय कहानी में कुछ नए शब्द आते हैं, तो बच्चों को उन्हें संदर्भ के अनुसार समझने व उनके अर्थ का अनुमान लगाने के लिए प्रेरित करें।

पढ़ने के बाद–

1. समीक्षा करें कि किताब में क्या हुआ था? जैसे कौन? क्या? कहाँ? कब?
2. बच्चों से कहानी दोहराने के लिए कहें– पहले क्या हुआ, फिर क्या हुआ? आगे क्या होने वाला होगा?
3. क्यों वाले प्रश्न पूछें: आपके अनुसार उस पात्र ने ऐसे क्यों किया होगा? लेखक ने यह कहानी क्यों लिखी होगी?
4. बच्चों के द्वारा लगाए गए अनुमानों की समीक्षा करें। क्या वे अनुमान सही थे?

अपनी किताबों का ध्यान कैसे रखें?

बच्चों को किताबें घर पर पढ़ने के लिए भी देनी चाहिएँ जिससे खाली समय में भी वे अपने पढ़ने की आदत को जारी रख सकें।

शिक्षक बच्चों को सिखाएँ कि वे किताबों के मित्र होने के साथ–साथ उनके डॉक्टर भी हैं। जैसे–हमें चोट लगने पर डॉक्टर मरहम/पट्टी करके ठीक करता है वैसे ही पढ़ने के दौरान यदि किताबें फट जाएँ तो बच्चों को किताबों का डॉक्टर बनकर उनकी मरम्मत करनी चाहिए। इसके अलावा किताबें लम्बे समय तक ठीक और पढ़ने योग्य बनी रहें इसके लिए उनकी सुरक्षा और समय–समय पर उनकी देखभाल करना अनिवार्य है। कक्षा में सर्व–सहमति से कुछ नियम बनाए जा सकते हैं।

- किताबें साफ़ हाथों से ही छुएँ।
- किताब के पन्ने ध्यान से पलटें ताकि वे फटें नहीं।
- किताबों को ख़राब मौसम, धूल, कीड़े–मकौड़े या जानवरों की पहुँच से दूर रखें।
- जब किताब घर पर ले जाएँ तो उसे बहुत छोटे बच्चों और पालतू जानवरों से दूर रखें।
- किताबों पर न कुछ लिखें और न ही पेन/पेन्सिल चलाएँ।

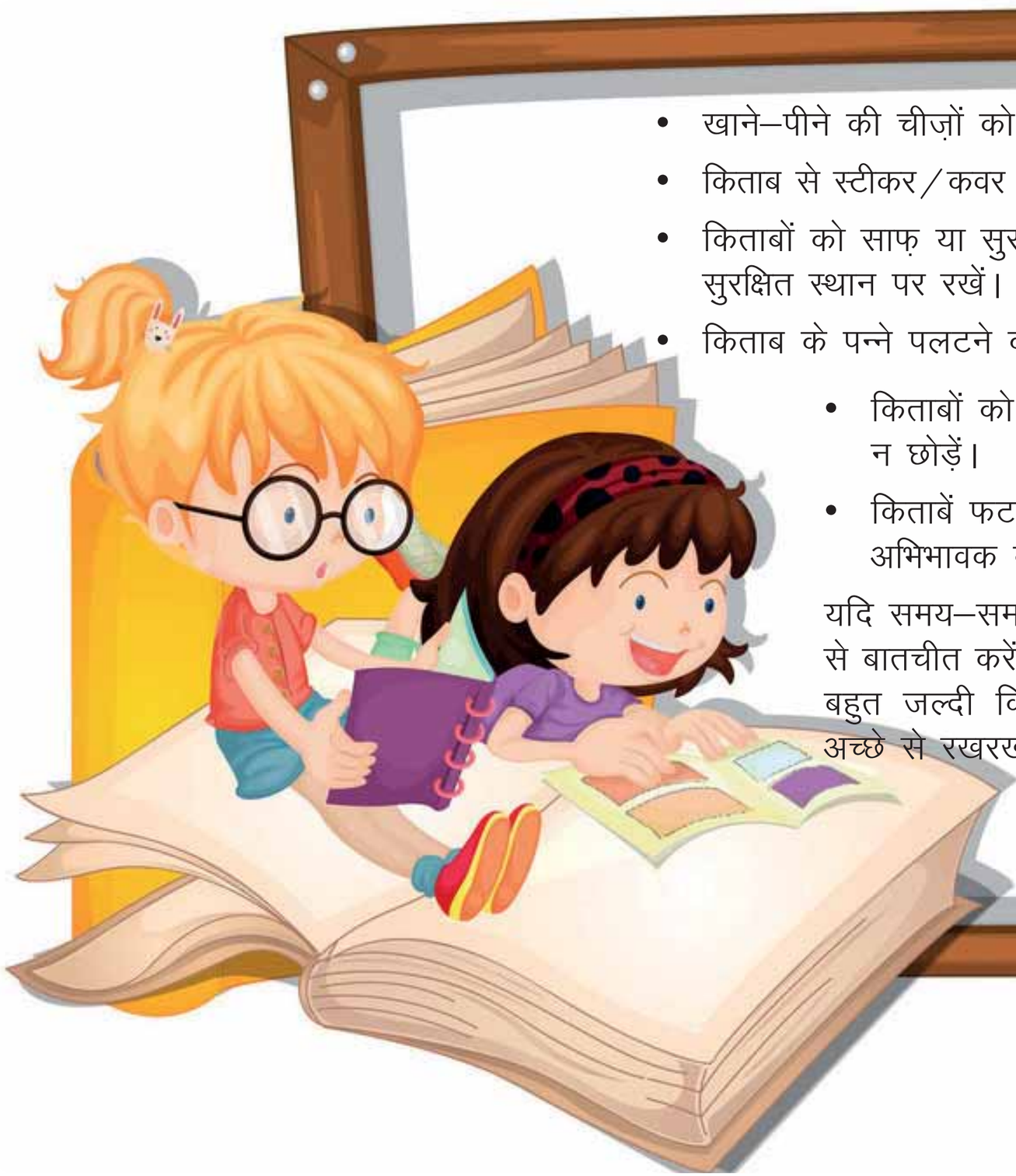

- खाने–पीने की चीज़ों को किताबों से दूर रखें।
- किताब से स्टीकर/कवर या कोई पन्ना न खींचें और न ही फटने दें।
- किताबों को साफ़ या सुरक्षित रखने के लिए, पढ़ने के बाद उन्हें सुरक्षित स्थान पर रखें।
- किताब के पन्ने पलटने के लिए पानी/थूक का प्रयोग न करें।
- किताबों को मोड़कर न पढ़ें और रखते समय खुली न छोड़ें।
- किताबें फटने या ख़राब होने पर शिक्षक या अभिभावक की मदद से उसकी मरम्मत करें।

यदि समय–समय पर शिक्षक इन सभी नियमों पर बच्चों से बातचीत करें और उन्हें इनके महत्त्व समझाएँ तो बच्चे बहुत जल्दी किताबों की देखभाल करना और उनका अच्छे से रखरखाव करना सीख जाते हैं।

ISBN 978-93-93667-35-9

SCERT

समग्र शिक्षा

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

NIPUN BHARAT